७. स्वागत है !

– शाम दानीश्वर

कवि परिचय : शाम दानीश्वर जी का जन्म फरवरी १९४३ में हुआ। शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात आप हिंदी अध्यापक के रूप में कार्यरत रहे। हिंदी के प्रति लगाव होने के कारण साहित्य रचना में रुचि जाग्रत हुई। प्रवासी साहित्य में मॉरिशस के कवि के रूप में आपकी पहचान बनी। अपने परिजनों से विछोह का दुख, गुलामी का दंश और पीड़ा आपके काव्य में पूरी संवेदना के साथ उभरी है। यथार्थ अंकन के साथ भविष्य के प्रति आशावादिता आपके काव्य की विशेषता है। प्रवासी भारतीय साहित्य में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा है । शाम दानीश्वर जी की मृत्यु २००६ में हुई ।

प्रमुख कृतियाँ : 'पागल', 'कमल कांड' (उपन्यास), काव्य संग्रह आदि।

काव्य प्रकार : विदेशों में बसे भारतीयों द्‍वारा हिंदी में रचा गया साहित्य 'प्रवासी भारतीय हिंदी साहित्य' कहलाता है। इन रचनाओं ने नीति-मूल्य, मिथक, इतिहास, सभ्यता के माध्यम से भारतीयता को सुरक्षित रखा है । प्रवासी साहित्य ने हिंदी साहित्य को समृद्‍ध बनाने के साथ-साथ पाठकों को प्रवास की संस्कृति, संस्कार एवं उस भूभाग के लोगों की स्थिति से भी अवगत कराया है । अभिमन्यु अनत, जोगिंदर सिंह कंवल, स्नेहा ठाकुर आदि अन्य प्रवासी साहित्यकार हैं ।

काव्य परिचय : प्रस्तुत कविता में कवि प्रवासी भारतीयों को अपनी विगत दुखद स्मृतियाँ भुलाकर मॉरिशस आने के लिए प्रेरित कर रहा है। अब मॉरिशस की भूमि नैहर के समान है, जहाँ परिजनों से मिलाप होगा। लघु भारत के आँगन में कवि सभी का स्वागत कर रहा है। कवि ने गिरमिटियों के जीवन में आए सकारात्मक पहलुओं को उजागर किया है । गिरमिटियों की पीढ़ियों के मन में स्थित भारतीयों की संवेदनाओं और उनकी सृजनात्मक प्रतिभाओं के दर्शन भी कराए हैं ।

स्वागत है !
स्वागत-स्वागत-स्वागत है ।
आओ, आओ, आओ !
ओ मेरे भाइयो !
बिखरे हुए मेरे परम दोस्तो !
आप सबों का सप्रेम स्वागत है
एक ही माँ के बालक हैं हम
और अनेक देशों में बिखरे हैं
आज मिलन हमारा हो रहा
कई युगों के बाद
तुम सब मॉरिशस की भूमि पर
पधार रहे हो आज
स्वागत है !

हम सब जहाजिया भाई ठहरे
कोई इस जहाज पर चढ़ा था,
तो कोई उस जहाज पर
और जब जहाज पानी में बहने लगे,
तो एक ही देश में नहीं पाए गए
लंगर पड़ा जब समुद्र तट पर,
हक्का-बक्का ताकने लगे,
अरे ! कहाँ आ गए हम इतनी दूर !
अरे ! मेरे भाई-भतीजे कहाँ हैं ?
इस जहाज में जगह नहीं थी
फिर उस जहाज पर तो चढ़े थे
स्वागत है !

भूल जाओ वह पुरानी कथा
मेरे हृदय के टुकड़ो !
भूल जाओ वह जहाजी कारनामे
जो होना था प्रारब्ध में,
वही तो हुआ हम सबके साथ
अब रोना, रोने से क्या होगा ?
जहाजी प्रणयन को सोचना क्या,
आज तो हम मिल ही रहे हैं,
युग-युगांतरों बाद
देखो, हम सब कैसे साथ हैं आज,
लघु भारत के प्रांगण में !
स्वागत है !

पनिया-जहाज पर कौन चढ़ेगा अब भैया,
बड़ा डर लग रहा है उससे तो
कहीं पुनः दोहरा न दे इतिहास हमारा
इस-उस धरती पर बिखर न जाएँ,
खोजते हुए निज बंधुओं को
आसमान की राह पकड़ आगे चल,
मॉरिशस की भूमि पर उतरेंगे सब
नैहर हो जैसे वही हमारा
बाबुल के लोग वहीं मिलेंगे
देश परदेश के नाम मिटेंगे,
आँसू थामे वहीं मिलेंगे
स्वागत है !

हे मेरे गिरमिटिया भाई !
'परमीट' अपनी जिगरछाप थी,
पर दासता पंक में जा गिरे थे
कितने युग लगे पंकज बनने में,
'मारीच' से मॉरिशस बनने में,
देखो इस पावन भूमि पर
बन बांधवों का सफल प्रणयन
यह तो तब था, घास ही पत्थर
पत्थर में प्राण हमने डाले
देखो इस देश को घूम-घूमकर
बिछड़े बंधुओं के लहू कणों का
स्वागत है !

हे मेरे भारत-नेपाल-श्रीलंका !
फीजी-सूरीनाम-पाक-गयाना !
साऊथ अफ्रीका, यूके-यूएसए-कनाडा !
फ्रांस रेनियन आदि के सहोदर बंधुओ !
इस भूमि में तुम सभी की
स्मृति अंकित है तल तक,
कहते हैं 'स्वर्ग' इसे हिंद महासागर का
कल्पना है या सत्य है ?
प्रिय भाइयो, कल्पना भी हो
तो स्वर्ग इसे तुम बना जाओ
स्वागत-स्वागत-स्वागत है !

('प्रवासी भारतीय हिंदी साहित्य' संग्रह से)

— ० —

शब्दार्थ :

लंगर = लोहे का वह काँटा जिसे जहाज खड़ा करने के लिए जंजीर से बाँधकर समुद्र में गिरा देते हैं।

प्रणयन = ले जाना, रचना

पनिया जहाज = पानी पर चलने वाला जहाज

नैहर = मायका

बाबुल = पिता

टिप्पणी

☆ **गिरमिटिया** : परतंत्रता में अंग्रेजों ने भारतीयों को अनुबंध सिद्‌धांत पर फीजी, सूरीनाम, मॉरिशस, सेशल्स आदि देशों में मजदूर बनाकर भेजा। अनुबंध पर गए यही मजदूर गिरमिटिया कहे जाने लगे।

स्वाध्याय

आकलन

१. उत्तर लिखिए :

(अ) 'स्वागत है' काव्य में दी गई सलाह। ....

(आ) प्रथम स्वागत करते हुए दिलाया विश्वास ....

(इ) 'मारीच' से बना शब्द ....

काव्य सौंदर्य

२. (अ) "यह तो तब था, घास ही पत्थर
पत्थर में प्राण हमने डाले।।"

उपर्युक्त पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।

(आ) 'स्वागत है' कविता में 'डर' का भाव व्यक्त करने वाली पंक्तियाँ ढूँढ़कर अर्थ लिखिए।

अभिव्यक्ति

३. (अ) 'विश्वबंधुत्व आज के समय की आवश्यकता', इसपर अपने विचार लिखिए।

(आ) मातृभूमि की महत्ता को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

रसास्वादन

४. गिरमिटियों की भावना तथा कवि की संवेदना को समझते हुए कविता का रसास्वादन कीजिए।

साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान

५. **जानकारी दीजिए :**

(अ) **प्रवासी साहित्य की विशेषता –** ....

(आ) **अन्य प्रवासी साहित्यकारों के नाम –**

....

....

अलंकार

काव्य की शोभा बढ़ाने वाले कारक, गुण, धन अथवा तत्त्व को अलंकार कहा जाता है । जिस प्रकार स्वर्ण आदि के आभूषणों से शरीर की शोभा बढ़ती है उसी प्रकार जिन साधनों से काव्य की सुंदरता में अभिवृद्‌धि होती है, वहाँ अलंकार की उत्पत्ति होती है ।

मुख्य रूप से अलंकार के तीन भेद हैं – शब्दालंकार, अर्थालंकार , उभयालंकार

हम शब्दालंकार का अध्ययन करेंगे ।

शब्दालंकार

- अनुप्रास
- यमक
- श्लेष
- वक्रोक्ति

अनुप्रास – जब काव्य में किसी वर्ण की आवृत्ति दो या दो से अधिक बार हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है ।

उदा. – (१) तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए ।

– भारतेंदु हरिश्चंद्र

(२) चारु चंद्र की चंचल किरणें, खेल रही थीं जल-थल में ।

– मैथिलीशरण गुप्त

वक्रोक्ति – वक्ता के कथन का श्रोता द्‌वारा वक्ता के अभिप्रेत आशय से चमत्कारपूर्ण भिन्न अर्थ लगाया जाए, वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है ।

उदा. – (१) को तुम इत आये कहाँ ? घनश्याम हौं, तौ कितहू बरसो ।
चितचोर कहावत है हम तो ! तँह जाहु जहाँ धन है सरसो ।
रसिकेश नये रंगलाल भले ! कहुँ जाय लगो तिय के गर सो ।
बलि पे जो लखो मनमोहन हैं ! पुनि पौरि लला पग क्यों परसो ।

– रसकेश

(२) मैं सुकुमारी नाथ बन जोगू ।
तुमहिं उचित तप मो कहँ भोगू ।

– संत तुलसीदास